

## Padma Shri



### **SHRI RAMLAL BARETH**

Shri Ramlal Bareth is well known for the Raigarh style of Kathak from the Raigarh court. Currently he is only surviving Kathak Dancer of Raigarh court. He is widely recognized across India for his significant contributions in the field of Kathak dance to popularize the Raigarh kathak style and establish Raigarh as a Kathak Gharana.

2. Born on 6<sup>th</sup> March, 1936, Shri Bareth's father was one of the finest Kathak dancer, maestro, and exponent of Raigarh style of Kathak dance. He learned the Kathak dance under the guru-shisya tradition from his father Pt. Kartikarm, Maharaja Chakradhar Singh and Guru Pt. Jailal Maharaj. He got an opportunity to stay in Raigarh court and learn Kathak dance, tabla and vocal music.

3. In 1956, Shri Bareth joined the Social Welfare Department as an artist and served until 1980. During this time, he founded Chakradhar Sangeet Vidyalaya in Raigarh and trained many Kathak dancers in Raigarh and nearby cities to promote the Raigarh Kathak style. In 1981, the Cultural Department of Madhya Pradesh government started Chakradhar Nritya Kendra in Bhopal and he was invited to work as Guru. He worked until 2011 and trained hundreds of students with the only intention to establish and evolve the Raigarh Kathak style as Raigarh Kathak Gharana. Currently he is residing in Bilaspur Chhattisgarh and providing advanced training to numerous students. He had served as Reader of the Dance Department at Indira Kala Sangeet Vishwavidyalaya, Khairagarh and trained many disciples and guided several research scholars for their thesis on Kathak dance. With his profound knowledge of Nrit, Nritya and Natya, he has directed and composed many bandishes, thumri, tarana and also choreographed many nritya-natika based on poetry and traditional story.

4. Shri Bareth has performed extensively in Dance and Music conferences and festivals and trained a large number of disciples who became performers and exponents of Raigarh Kathak style. Disciples of Shri Ramlal are performing all over the world and many of them are teaching Raigarh Kathak style in different universities. He has been invited for Kathak workshops in many prestigious Dance and Music institutions from different parts of India, to provide training of specialties and rare compositions of Raigarh Kathak style. Over the last six decades, he has served as examiner in Dance and Music universities and institutes like Kathak Kendra Delhi, Jaipur Kathak Kendra, Indira Kala Sangeet Vishwavidyalaya, Khairagarh etc. and participated in many Kathak seminars as speaker and presented Raigarh Kathak dance style. He worked as co-writer of the book 'Raigarh mein Kathak' written by his father. He has been a respected member of Madhya Pradesh Kala Parishad and Program Committee Ustad Allauddin Khan Sangeet Academy Cultural Department M.P. Government Bhopal. He was also an Executive member of Sangeet Natak Academy.

5. Shri Bareth is the recipient of numerous awards and honours for his incredible work in Kathak Dance like Sangeet Natak Academy Award in 1996, Chhattisgarh government award Chakradhar Samman in 2006 and Shikhar Samman by the Madhya Pradesh Government.

पद्म श्री



श्री रामलाल बरेठ

श्री रामलाल बरेठ रायगढ़ दरबार से जुड़ी कथक की रायगढ़ शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। फिलहाल वह रायगढ़ दरबार के एकमात्र जीवित कथक नर्तक हैं। रायगढ़ कथक शैली को लोकप्रिय बनाने और रायगढ़ को कथक घराना के रूप में स्थापित करने में कथक नृत्य के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए वह देश भर में प्रसिद्ध हैं।

2. 6 मार्च, 1936 को जन्मे श्री बरेठ के पिता बेहतरीन कथक नर्तक, उस्ताद और रायगढ़ शैली के कथक नृत्य के प्रतिपादकों में से एक थे। उन्होंने अपने पिता पं. कार्तिकर्म, महाराजा चक्रधर सिंह और गुरु पं. जयलाल महाराज से गुरु-शिष्य परंपरा के तहत कथक नृत्य सीखा। उन्हें रायगढ़ दरबार में रहने और कथक नृत्य, तबला और गायन सीखने का अवसर मिला।

3. वर्ष 1956 में, श्री बरेठ एक कलाकार के रूप में समाज कल्याण विभाग में शामिल हुए और वर्ष 1980 तक सेवाएं दीं। इस दौरान उन्होंने रायगढ़ में चक्रधर संगीत विद्यालय की स्थापना की और रायगढ़ कथक शैली को बढ़ावा देने के लिए रायगढ़ और आसपास के शहरों में कई कथक नर्तकों को प्रशिक्षित किया। वर्ष 1981 में मध्य प्रदेश सरकार के सांस्कृतिक विभाग ने भोपाल में चक्रधर नृत्य केंद्र की शुरुआत की और उन्हें वहां गुरु के रूप में काम करने के लिए आमंत्रित किया गया। उन्होंने वर्ष 2011 तक वहां काम किया और रायगढ़ कथक घराना के रूप में रायगढ़ कथक शैली को स्थापित और विकसित करने के एकमात्र इरादे से सैकड़ों छात्रों को प्रशिक्षित किया। वर्तमान में वह बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में रहते हैं और अनगिनत विद्यार्थियों को एडवांस्ड ट्रेनिंग प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ में नृत्य विभाग के रीडर के रूप में कार्य किया और कई शिष्यों को प्रशिक्षित किया तथा कथक नृत्य पर थीसिस के लिए कई शोधार्थियों का मार्गदर्शन किया। नृत्य, नृत्य और नाट्य के अपने गहन ज्ञान के साथ, उन्होंने कई बंदिशों, तुमरी, तरानों की रचना और निर्देशन किया है तथा कविता और पारंपरिक कहानी पर आधारित कई नृत्य-नाटिकाओं की कोरियोग्राफी भी की है।

4. श्री बरेठ ने नृत्य और संगीत सम्मेलनों तथा समारोहों में व्यापक तौर पर प्रस्तुतियां दी हैं और उन्होंने बड़ी संख्या में शिष्यों को प्रशिक्षण दिया है जो रायगढ़ कथक शैली के कलाकार और प्रतिपादक बने। श्री रामलाल के शिष्य दुनिया भर में प्रदर्शन कर रहे हैं और उनमें से कई अलग-अलग विश्वविद्यालयों में रायगढ़ कथक शैली पढ़ा रहे हैं। उन्हें रायगढ़ कथक शैली की बारीकियों और दुर्लभ रचनाओं का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए भारत के विभिन्न हिस्सों से कई प्रतिष्ठित नृत्य और संगीत संस्थानों में कथक कार्यशालाओं के लिए आमंत्रित किया गया है। पिछले छह दशकों में, उन्होंने नृत्य और संगीत विश्वविद्यालय और संस्थान जैसे कथक केंद्र, दिल्ली; जयपुर कथक केंद्र, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ आदि जैसे संस्थानों में परीक्षक के रूप में काम किया है। उन्होंने कई कथक सेमिनारों में वक्ता के रूप में हिस्सा लिया तथा रायगढ़ कथक नृत्य शैली को प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने पिता की लिखी हुई 'रायगढ़ में कथक' पुस्तक के सह-लेखक का काम किया। वह मध्य प्रदेश कला परिषद एवं कार्यक्रम समिति उस्ताद अलाउद्दीन खान संगीत अकादमी सांस्कृतिक विभाग, मध्य प्रदेश शासन, भोपाल के सम्मानित सदस्य रहे हैं। वह संगीत नाटक अकादमी के कार्यकारी सदस्य भी थे।

5. श्री बरेठ को कथक नृत्य में उनके अविश्वसनीय काम के लिए कई पुरस्कार और सम्मान मिल चुके हैं जैसे वर्ष 1996 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, वर्ष 2006 में छत्तीसगढ़ सरकार का पुरस्कार चक्रधर सम्मान और मध्य प्रदेश सरकार का शिखर सम्मान।